Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

ललितेश्वर प्रसाद शाही के व्यक्तित्व पर श्रीबाबू का प्रभाव

विनय कुमार भूषण
इतिहास विभाग, आई०डी०कॉलेज, मुजफ्फरपुर, बी०आर०ए०बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

Article Info
Volume 3 Issue 6
Page Number: 64-68

Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 01 Dec 2020
Published : 25 Dec 2020

श्रीबाबू गाँधीवादी थे। गाँधी जी हों या श्री बाबू हों सबसे पहले वे मानवता वादी थे। मानवीय संवेदना का सकारात्मक स्वरूप हीं व्यक्ति के व्यक्तिव में निखार लाता है। समाज में ख्याति एवं प्रतिष्ठा दिलाता है। दुसरे के दुखः से दुखी और सुख में खुशी व्यक्त करना हीं मानवीय संवेदना है। दुसरे मनुष्य के आत्मा को चोट पहुँचाना, दुखी करना संवेदनहीनता है। संवेदनशील व्यक्ति हीं क्रांतिकारी हो सकता है। गाँधी जी महामानव थे। उनमें मानवीय संवेदना कुट–कुट कर भरी हुयी थी। श्रीबाबू भी गाँधीवादी थे और उनमें मानवता के प्रति सच्चा प्रेम था। वे राष्ट्रवादी थे उनमें भारतवर्ष को अंग्रेजों से मुक्ति कराने का एक सपना था। परिकल्पना था और था दृढ़ संकल्प। श्रीबाबू के इन सब बातों का, विचारों का प्रभाव ललितेश्वर प्रसाद शाही पर पड़ा। 1942 के ''करो या मरो'', ''अंग्रेजों भारत छोड़ों'' आन्दोलन में शाही जी जब पटना कैंप जेल से हजारीबाग जेल भेजे गये उस समय वहाँ श्रीबाबू जेल में पहले से हीं गिरफ्तार कर लाये जा चुके थे। वहीं शाही जी से उनकी भेंट हुयी और दोनों एक दुसरे के सन्निकट आये। विचारों का आदान–प्रदान हुआ और शाही जी के दृढ़ इच्छा शक्ति को सुनकर श्रीबाबू प्रभावित हुये। बाद में श्रीबाबू के व्यक्तित्व, मानवीय संवेदना से शाही जी प्रभावित हुये।

1942 का अगस्त आन्दोलन का शोला भरकने से पहले उसकी भूमिका तैयार करने में श्रीबाबू की अप्रतिम वाणी से हवा में बिजली कौंध गयी थी। उन्होंने बिहार वासियों के बीच महाभारत के श्रीकृष्ण की तरह पाचंजन्य फूंका था। श्री बाबू के ललकार पर दुर्बल हृदय का व्यक्ति भी सबल एंव दृढ़ होकर मैदान में निकल पड़ा था।

क्रान्ति के शोले भरकने से एक सप्ताह पूर्व उन्होंने मुजफ्फरपुर में एक विशाल जन समुह को सम्बोधित किया था। उस सम्बोधन में श्रीबाबू ने कहा था –''जिस महान क्रान्ति की अराधना आप इतने वर्षों से कर रहे हो उसका आगमन समीप है। समय आ गया है जिसके हृदय में देश सेवा का अरमान है, वह पुरा कर ले। पीछे पछताने से कुछ हाथ नहीं लगेगा। भारत माता ने हजारों–लाखों ऐसे सपुत पैदा कर रखा है जो अपनी माँ को बन्धक छुड़ा लेने, क्रुर अंग्रेजों को भगाकर भारत माता को आजादी दिलाने के लिये अपनी जान न्योछावर करने को तैयार हैं। मैं अपने बिहार के वैसे वीर साथी, भाई को और भारत माँ के सपूत को आह्वान करता हूँ कि चलो अंग्रेजों को भगाओ, माँ को मुक्त कराओ। स्वाधीनता पाओ। अपना जीवन सार्थक बनाओ। इस सिंह गर्जना पर दुर्बल काया का व्यक्ति भी भारत माता की जय का नारा बुलन्द करने लगा और सभा में उपस्थित लोगों पर राष्ट्रीय भावना चढ़कर बोलने लगा। श्रीबाबू के इस भाषण ने शाही जी के मन को झकझोर दिया। श्रीबाबू के भाषण ने उत्प्रेरक का काम किया। शाही जी के मन पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा और वे अगस्त क्रान्ति में (1942 में) कुछ पड़े।

9 अगस्त 1942 को जब अंग्रेजी हुकुमत ने महात्मा गाँधी समेत कांग्रेस कार्य समिति के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया था तो श्रीबाबू ने पटना कॉलेज और पटना साईस कॉलेज के बीच फिटींग पर खड़ा होकर छात्रों और आमजनों को आह्वान किया कहा कि गांधी और कार्यसमिति के सदस्यों को गिरफ्तार कर अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान की मर्दानियत को ललकारा है। मैं उसके इस चुनौती को स्वीकार करता हूँ। अब हमें उसका जबाव देना है। बस इतनी हीं आबाज पर विद्यार्थीयों के बड़े–बड़े जत्थे विदेशी हुकुमत के दमन का मुकाबला करने के लिये क्रांति की मशाल लेकर चारो तरफ निकल पड़े और चाहे जितनी भी शहादत देनी पड़ी हो पटना के विद्यार्थी तथा नौजवनों ने सचिवालय के शिखर पर तिरंगा फहरा कर हीं दम लिया। ललितेश्वर प्रसाद शाही इस आन्दोलन के भागीदार थे। स्वतंत्रता सेनानी के रूप में यह वाक्या तो सिर्फ एक नमुना है, अनेकानेक उनके कृतित्व हैं। आज

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भी विधान सभा के सामने भारत माता के उन सपुतों का जो अगस्त क्रान्ति में सचिवालय पर झंडा फहराने में शहीद हो गये थे उनके अमरत्व की कहानी कह रहा है।

1942 के स्वतंत्रता संग्राम में शाही जी ने बढ़—चढ़कर हिस्सा लिया और श्रीबाबू के व्यक्तित्व का उन पर काफी प्रभाव पड़ा। श्रीबाबू के व्यक्तित्व के प्रभाव से प्रभावित होकर शाही जी ने भी अपने को उसी साँचे में ढ़ाल दिया जिसका कोई मिशाल हीं नहीं है। इस प्रकार श्रीबाबू की तरह शाही जी को भी लोगों ने गरिमा के शिखर पर हीं देखा।

श्रीबाबू गाँधीवादी थे। गाँधी जी के विचार को आत्म सात करके उन्होंने अपने व्यक्तित्व को निखारा। श्रीबाबू के गाँधीवादी नैतिकता का छाप ललितेश्वर प्रसाद शाही पर भी पड़ा। यद्यपि नमक सत्याग्रह में ही शाही जी श्रीबाबू की वीरता से परिचित हो चुके थे। श्रीबाबू अपने बेटे के विवाह के समय जेल में थे उन्हें अंग्रेजी हुकुमत ने बारात में सम्मिलित नहीं होने दिया। इस घटना का प्रभाव शाही जी के मन को उद्वेलित कर दिया सोचा! ये कैसा कानून है? ये कैसी जालिम सरकार है? जो एक पिता को अपने पुत्र के शादी में भी शामिल नहीं होने देती। शाही जी ने माना की राष्ट्र के सामने एक व्यक्ति या परिवार का हित महत्वहीन है। राष्ट्र प्रेम के आगे पुत्र प्रेम नगन्य है। श्रीबाबू की इस उदात्य राष्ट्रीय चेतना का कायल होने का एक पहला मौका उनके भी मन मस्तिष्क को झकझोड़ दिया था। इस प्रकार श्रीबाबू ने शाही जी जैसे सख्सीयत को जगाया और शाही जी श्रीबाबू के देश भक्ति का कायल बन गये। उस समय शाही जी मात्र 12—13 वर्ष के थे लेकिन उनके मन में देश के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना ने धुन का मतवाला बना दिया था।

श्रीबाबू विद्यानुरागी थे। उनकी परिकल्पना थी कि शिक्षा प्रकाश प्रदान करती है। बिना शिक्षा के किसी राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। बिना शिक्षा के राष्ट्रीयता का ज्ञान असंभव है। स्वाधीनता प्राप्त करना संभव नहीं है। मौका मिलते हीं श्रीबाबू ने 1946 के अंतरिम सरकार में पुरे बिहार में 400 बेसिक स्कूल खोलने का प्रस्ताव पास किया। शाही जी जब जिला परिषद् के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुये तो उन्होंने श्रीबाबू के इस निर्णय को आगे बढ़ाया और सरकार के निर्णय के अनुसार मुजफ्फरपुर में 25 विद्यालय खोला जाना चाहिए था। अपने जिलापरिषद् के उपाध्यक्षत्व काल में शाही जी ने आम लोगों से जमीन दान में लेकर 25 की जगह 65 बेसिक विद्यालय खोला, दो पोस्ट बेसिक स्कूल और अनगिनत शिक्षण संस्थाएँ इन्होंने स्थापित किया। अनेकानेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में शाही जी ने सहयोग प्रदान किया।

स्वाध्याय शाही जी का स्वभाव बन गया था। यह स्वभाव उन्होंने श्रीबाबू से प्राप्त की थी। अर्थात् स्वाध्याय करने पुस्तकों को पढ़ने की प्रेरणा शाही जी को श्रीबाबू से प्राप्त हुयी थी। श्रीबाबू एक अध्ययनशील व्यक्ति थे उन्होंने अपने जीवन में हजारों पुस्तकों का अध्ययन किया था। आज भी मुंगेर की लाईब्रेरी में जो इनकी पढ़ी हुयी पुस्तक सूचीबद्ध है उसकी संख्या (46000/—) छेयालीस हजार है। श्रीबाबू की तरह हीं शाही जी भी अच्छी—अच्छी पुस्तकें खोजकर पढ़ते थे खासकर साहित्यक पुस्तकों से शाही जी का विशेष लगाव था। इस प्रकार शाही जी श्रीबाबू की विधानुरागिता और अध्ययन शीलता के साथ शिक्षा से प्रेम के प्रभाव में थे।

श्रीबाबू दया और करूणा के सागर थे। एक बार नेतरहाट स्कूल के छात्रों ने अपनी नाट्यकला को दिखाने के लिये श्रीबाबू को बुलाया। संयोगवश नाटक के मंच में बिजली से आग लग गयी यह देखकर श्रीबाबू फुट—फुट कर रोने लगे। यद्यपि आग पर तुरत काबू पा लिया गया लेकिन वे बच्चों के प्रति इतने भावुक हो गये कि उनकी अश्रुधारा नहीं रूक रही थी। उसी प्रकार शाही जी भी एक बार एल०पी०शाही डिग्री कॉलेज के एक शिक्षक को मोटरसाईकिल छीनने वाले ने गोली मार दी थी यद्यपि शिक्षक जीतेन्द्र बच गया लेकिन मालूम होने पर शाही जी भी कई दिन तक बेचैन रहते वे सुबह—शाम उसके बारे में पुछते रहते थे। इस प्रकार श्रीबाबू की तरह शाही जी का भी मानवीय पक्ष दया और करूणा मय था।

हर युग में एक महापुरूष पैदा होता है जो समय से आगे का स्वप्न देखता है। लेकिन जन साधारण उसके पीछे चलने का दावा करने वाले अपनी कमजोरियों के कारण जमीन से ऊपर उठकर नहीं देखना चाहते। फल होता है कि पैगम्बर संदेश देता है, मगर लोग पुरानी धारा में बहते रह जाते हैं। श्रीबाबू और एल०पी०शाही वैसे हीं मानवता वादी पैगम्बर थे।

श्रीकृष्ण सिंह (श्रीबाबू) में जनतांत्रिक और संसदीय मूल्य कुट–कुट कर भरे थे। बल्कि यह कहा जाये कि वे जनतांत्रिक और संसदीय मूल्यों के मुर्तरूप थे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ललितेश्वर प्रसाद शाही भी छात्र जीवन से लेकर जिला परिषद् और विधान मंडल हो सब जगह उन्होंने प्रजातांत्रिक मूल्यों और संसदीय मूल्यों को आत्मसात करके हीं कार्य निष्पादन किया। मंत्री रूप में भी काम इन्होंने संसदीय मर्यादा का अनुपालन करते हुये हीं किया। विभाग से सम्बन्धित कोई प्रश्न हो या प्रस्ताव शाही जी ने संसदीय नियम एवं परम्परा के अनुरूप हीं उसे अंजाम पर पहुँचाया। इस प्रकार शाही जी ने जीवन पर्यन्त प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा की तथा संसदीय मूल्य के अनुरूप अपना आचरण किया। यह व्यवहार श्रीबाबू से मेल खाता है। इसलिये हम कह सकते हैं कि श्रीबाबू के जन्तंत्र में विश्वास और संसदीय मूल्य की रक्षा करने का स्वभाव शाही जी ने निश्चित रूप से प्रभावित किया है। शाही जी विधान सभा में कभी भी अमर्यादित या असंसदीय शब्दों का प्रयोग नहीं किया। सत्ता पक्ष का व्यक्ति हो या विपक्ष का शाही जी ने कभी किसी से उत्तेजना में बात नहीं की।

शिक्षा एवं साहित्य से शाही जी का अद्भुत लगाव था। श्रीबाबू को अध्ययन करने का शौक था। इसका प्रभाव शाही जी पर भी पड़ा। लिखने–पढ़ने का शौक शाही जी ने श्रीबाबू से ग्रहण किया। श्रीबाबू के समय में बुद्धिज्म एण्ड वैशाली 1957, वैशाली परिचय 1959 भषाण संग्रह और वैशाली की महिमा 1960 का प्रकाशन कराया था। शाही जी ने Beyond freedom नामक पुस्तक लिखा जिसमें श्रीबाबू और पं० जवाहर लाल नेहरू का पत्राचार संग्रह है। शाही जी स्वयं श्रीबाबू पर अमृत कलश, श्रीकृष्ण सिंह संचयन और बनते बिहार का साक्षी नामक पुस्तक का सम्पादन कर प्रकाशित कराया। अतः सिर्फ अध्ययन और अध्यापन के क्षेत्र में ही दोनों का तुलनात्मक अध्ययन नहीं है बल्कि प्रकाशन और लेखन के क्षेत्र में भी शाही जी ने काम किया है जो साहित्यक रचना का कार्य भी एक दुसरे से मेल खाता है और श्रीबाबू के साहित्यक रूचि का प्रभाव भी शाही जी पर स्पष्ट दिखता है।

श्रीबाबू कहते थे ''कविता का संबंध दिल से है। दिमाग किसी चीज को देखता है, उसकी छानवीन करता है और उसे जान पाता है। मगर दिल की आँखें इतनी तेज है कि वे यह भी देख लेती हैं कि वह चीज क्या है और क्या हो सकती है? इसलिये किसी जमाने की जितनी पहचान दिमाग वाले कर सकते हैं, कवि उससे और आगे बढ़कर वह क्या हो सकता है की भी कल्पना कर सकता है। इसलिये समाज को आगे बढ़ाने में साहित्य से बड़ा बल बडी ताकत मिलती है। आज साहित्यकारों के भीतर एक विचारधारा जर्बदस्त रूप में काम कर रही है कि कविता का दायरा इतना बड़ा होना चाहिए कि उसमें समाज आ जाये। यह अच्छी चीज है। मगर उसमें कहीं खुद आदमी ही न खो जाय, इसकी ओर से होसियार भी रहना जरूरी दीखता है। श्रीबाबू के इन साहित्यक आलेखों और विचारों का प्रभाव भी शाही जी पर परिलक्षित होता है।

बिहार का रोम–रोम श्रीबाबू का ऋणि है। श्रीबाबू के नेतृत्व में बिहार की प्रति व्यक्ति आय तब पुरे देश में दुसरे स्थान पर थी। वह आज सबसे नीचे चली गयी है। उद्योग के क्षेत्र में बिहार की सम्पूर्ण प्रगति का एक मात्र श्रेय श्रीबाबू को है। राँची में एच०ई०सी० की स्थापना, बोकारो स्टील प्लांट, देश का प्रथम खाद कारखाना सिन्दरी फर्टिलाईजर तथा बरौनी ऑयल रिफाइनरी आदि स्थापित हुये। दो पंचवर्षीय योजना में बिहार में जितना काम हुआ उतना बाद के सभी पंचवर्षीय योजनाओं को मिलाकर भी नहीं हुआ। बिहार के प्रति कर्तव्यनिष्ठता का परिचय देते हुये श्रीबाबू ने कोशी प्रोजेक्ट, गंडक प्रोजेक्ट, बरौनी और पतरातू थर्मल पावर स्टेशन आदि पर कार्य कराया। श्रीबाबू द्वारा किये गये इन सब कार्यों का प्रभाव शाही जी पर पड़ा तथा शाही जी ने एस०के०एम०सी०एच० मुजफ्फरपुर, आई०जी०आई०एम०एस० शेखपुरा की स्थापना कर स्वास्थ्य के क्षेत्र में कृतिमान स्थापित किया। उसी तरह बिरसा कृषि विश्वविद्यालय राँची और आर०आई०टी० जमशेदपुर की स्थापना कर चिकित्सा शिक्षा, कृषि शिक्षा, तकनीकि शिक्षा, विधि शिक्षा और समान्य शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालयों एवं विद्यालयों की स्थापना कर आधुनिक बिहार के निर्माण या बनते बिहार के साक्षी के रूप में अपना नाम पुरूषार्थ के प्रतीक के रूप में स्थापित किया। इस प्रकार ललितेश्वर प्रसाद शाही ने सार्वजनिक काम करना जो श्रीबाबू से सिखा था उसको अपने जीवन में उतारा।

ललितेश्वर प्रसाद शाही जी को बिहार से विशेष लगाव था। बिहार की मिट्टी में पले–बढ़े इसलिये बिहार के विकास की ज्यादा चिन्ता थी। यह बात श्रीबाबू में भी था। श्रीबाबू को पं० नेहरू केन्द्र में जाने का कितनी बार न्योता दिया। अवसर दिया! बुलाया। लेकिन श्रीबाबू बिहार छोड़कर दिल्ली जाना पसन्द नहीं किया। इसलिए उन्होंने अंतरिम सरकार में जो बिहार का सत्ता संभाला वह जीवन के अंतिम साँस तक बिहार की हीं चिन्ता करते रहे। बिहार के विकास को ही अपना लक्ष्य रखा। इस बात का प्रभाव ललितेश्वर प्रसाद शाही पर भी पड़ा। शाही जी चाहते तो 1952 में पार्लियामेंट का टिकट उन्हें मिल जाता और उस समय कांग्रेस पार्टी का जो उम्मीदवार होता था उसे संसद या विधान मंडल में जाना प्रायः तय माना जाता था। लेकिन शाही जी ने

पार्लियामेन्ट का टिकट स्वयं नहीं लेकर उन्होंने अपनी जगह दिग्विजय नारायण सिंह को टिकट दिलवाया और दिग्विजय बाबू कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जितकर 1952 में ही मुजफ्फरपुर से लोक सभा के सदस्य बन गये। 1952 में शाही जी को लोक सभा का टिकट नहीं लेने का एक विशेष कारण यह भी था कि जिला परिषद् के उपाध्यक्ष रहते हुये शाही जी ने बहुत सी योजनाओं पर काम शुरू किया हुआ था। विद्यालय की स्थापना जमीन दान में लेना, ग्रामीण सड़कों का निर्माण आदि विकास के बहुत सारे कार्य योजना कार्यान्वित हो रही थी, पूर्ण नहीं हुयी थी। शाही जी इन बुनियादी कार्यों में लगे हुये थे जिससे कि बिहार खासकर मुजफ्फरपुर जिला के विकास का संरचनात्मक आधार तैयार किया जा रहा था। यही संरचनात्मक आधार आगे के विकास का नीब की ईट और बुनियादी धरातल था। इसलिये शाही जी इसको छोड़कर कहीं और जाने को तैयार नहीं थे। इस प्रकार एल०पी०शाही और श्रीबाबू बिहार के प्रति समर्पित भाव से काम करने वाले व्यक्तित्व थे। आज कल के नेताओं को अपनी तरक्की इसमें दिखती है कि कितना जल्दी मुखिया से विधायक और विधायक से एम०पी० बन जाये लेकिन उनको मुखिया रहते अपने ग्राम पंचायत और वहाँ के लोगों के प्रति कोई जबावदेही का ज्ञान का अभास नहीं होता। उसी तरह विधायक रहते हुये अपने विधान सभा क्षेत्र की समस्याओं और उसके निदान की चिन्ता उन्हें नहीं होती सिर्फ अपनी तरक्की अपना और अपने लिये भौतिक सुख साधन अपने लिये पैसा और ऐश्वर्य की चिन्ता उन्हें सताती है। श्रीबाबू और शाही जी की तरह आज बिहारी और बिहार से प्रेम करने वाले विरले नेता मिलेंगे। तभी तो आज के नेताओं को कार्यावधि समाप्त होने के पश्चात् कोई पहचान नहीं बचता, कोई नाम लेने वाला नहीं रहता है। अतः बिहार में आवश्यकता है श्रीबाबू और एल०पी० शाही जैसे व्यक्तित्व और नेतृत्व का जो बिहार और विहारियों की चिन्ता से जगे और सोये, उनका कार्य करें तभी बिहार अपनी खोयी हुयी प्रतिष्ठा को लौटा सकेगा। श्रीबाबू बिहार के हक के लिये पंडित नेहरू से भी लड़ जाते थे और तब तो उनके मुख्यमंत्रीत्व काल में उतने सारे कल कारखाने की स्थापना पंडित नेहरू ने बिहार में किया। इसका श्रेय श्रीबाबू को जाता है और श्रीबाबू से प्रभावित होकर श्री शाही जी ने संस्थाओं की स्थापना की। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या स्वास्थ्य का क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र हो या कृषि का क्षेत्र, सड़क हो या बिजली शाही जी ने जो काम किया वह बिहार के लिये वरदान है।

शाही जी ने लिखा कि स्वस्थ्य शरीर और सुन्दर विचार के लिये, नयी चेतना और नया जोश एवं आत्म निर्भरता के लिये शिक्षा परम आवश्यक है। इसलिये प्राथमिकता में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और उसके भौतिक संरचना को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से शाही जी ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में बिहार में अतुलनीय काम किया और पुनः केन्द्र में भी जब मौका मिला तो इन्होंने इसे सिद्ध करने का प्रयास किया कि ''शिक्षा समाज का दर्पण है और संस्कृति राष्ट्र की चेतना''। इसको लेकर वे निरंतर आगे बढ़ते रहे और अनवरत क्रियाशील रहकर मानवीय पक्ष में नई–नई चेतना जगाने, नया जोश लाने के लिये क्रियाशील रहे।

ललितेश्वर प्रसाद शाही को धर्म निरपेक्ष और जाति निरपेक्ष की राजनीति में विश्वास था। उनका मानना था कि कोई भी ईमानदार राजनीतिज्ञ जात–पात और मजहवी बात करके अधिक दिन तक स्थायी राजनीति नहीं कर सकता। भावना स्थायी नहीं होती है। यह बदलती रहती है। इसलिये भावनात्मक राजनीति में स्थिरता और स्थायित्व नहीं हो सकता। जात–पात करके या मजहव का भावना भड़का कर आप तत्काल में उसका व्यक्तिगत लाभ उठा सकते हैं लेकिन इससे राष्ट्रीय क्षति होगी। जिस राष्ट्र के लोग जातीय आधार पर बँटे होंगे, धर्म के आधार पर बँटे होंगे वहाँ राष्ट्रीयता की बात बेमानी होगी। शाही जी का कहना था कि किसी भी राष्ट्रीय धर्म में एकता की बात आती है, उस राष्ट्र के अखंडता की बात वहाँ के नीति में अर्न्तनिहित होता है। उस नीति के आधार पर जो योजनाएँ बनायी जाती है वह सबको अवसर प्रदान करने के लिये बनायी जाती है। भारतीय संविधान के चैप्टर तीन के आर्टिकल 14 से 18 में भी समानता के अधिकार की चर्चा की गयी हैं इसलिये जात–पात और धर्म–मजबह के आधार पर सकारात्मक राजनीति की कल्पना निरर्थक होगी। जाति और धर्म के राजनीति का प्रयोग भी भारत वर्ष में देखा गया है, असफल हुआ है। भले हीं थोड़े दिन के लिये उसका लाभ किसी व्यक्ति या किसी राजनीतिक दल को प्राप्त हो गया हो लेकिन राजनीति का वह रास्ता जिसमें जात–पात या धर्म की बात कही गयी है बेमानी है।

लेकिन इतना तो माना हीं जायेगा की धर्म या जाति पर आधारित किसी भी प्रकार की राजनीति सकारात्मक राजनीति नहीं हो सकती है और शाही जी धर्म और जातिगत आधारित राजनीति के पक्षधर भी नहीं थे। उनका विश्वास प्रजातांत्रिक और संसदीय मूल्यों में था जिसमें धर्मनिरपेक्षता और जाति निरपेक्षता हीं मूल पूंजी है और यही राजनीति का मूल अस्त्र और कुंजी भी है। शाही जी में यह विचार उनके अपने पुरखों का देन तो हैं हीं साथ हीं श्रीबाबू के सानिध्य ने इसे और भी मजबुत बना दिया। श्रीबाबू

कभी जात–पात में विश्वास भी नहीं किये उन्होंने बसुधैव कुटुम्बकम की भावना से काम किया। सबकी भलाई और सबका विकास में विश्वास रखा। श्रीबाबू जाति वादी संकीर्ण मानसिकता के नहीं थे, इसका यह भी एक प्रमाण है कि अपने निवास पर स्थित सचिवालय में इन्होंने एक भी व्यक्ति को जो उनकी जाति का हो जगह नहीं दिया था। उनके सचिव रामानन्द सिन्हा कायस्त जाति के थे। मुख्य सुरक्षा अधिकारी सूर्य देव सिंह राजपुत थे। सचिव सलाम साहब मुस्लमान थे तथा गोपनीय पत्र टाईपिस्ट फकीरा लाल जी कायस्त एवं राधारमण सिंह राजपुत जाति के थे। दुसरे मुख्य मंत्री ने इस तरह का नजीर आज तक पेश नहीं किया। श्रीबाबू के इन सिद्धान्तों एवं विचारों का प्रभाव शाही जी पर भी रहा। इसलिये शाही जी को सर्वजातीय समर्थन मिलता था। शाही जी धर्मान्धता को राजनीति का जहर मानते थे। वे धर्मनिरपेक्ष राजनीति में विश्वास करते थे। इसलिये उनकी राजनीति में स्थायित्व भी रहा जो इतने अधिक दिनों तक सबका विश्वास अर्जीत कर अपनी प्रतिष्ठा कायम रखे। अतः धर्मनिरपेक्षता एंव जातिगत राजनीति से ऊपर का व्यक्तित्व ललितेश्वर प्रसाद शाही का व्यक्तित्व है।

जब एक युग अपनी मान्यताओं के साथ अनुपयोगी हो जाता है तो नई मान्यताओं के साथ एक नये युग का उद्भव आवश्यक हो जाता है। पुरानी मान्यताओं के विचलन से जो अव्यवस्था उत्पन्न होती है उसके परिणामस्वरूप समाज में अद्भुत नई शक्तियों के आधार पर एक अभिनव समाजिक एंव सांस्कृतिक संगठन का विकास अनिवार्य हो जाता है। ऐसी घड़ियों में से व्यक्ति उत्पन्न होते हैं जो युग की नवीन चेतनाओं को अपने व्यक्तित्व में केन्द्रीभूत कर लेते हैं और अपनी सृजनात्मक प्रतिभा के बल से दिव्य दृष्टि प्राप्त करते हैं, जिनके द्वारा उस युग के लोगों के मस्तिष्क को उद्वेलित करने वाली सभी समस्याओं का समाधान सहज हीं हो जाता है। ऐसे हीं लोगों के विषय में यह कहा गया है कि वे इतिहास को डवाडोल कर देते है और उसके क्रम को आगे बढ़ा देते हैं। ऐसी हीं सृजनात्मक दृष्टि और दिव्य व्यक्तित्व वाले लोग समाज को मृत प्राय संस्कृति के गर्त से निकाल कर एक नवीन एंव उच्चत्तर संस्कृति के पथ पर अग्रसर करते हैं। ये मानव विच्छिनतकारी व्यक्तित्व ऐसी शक्तियों को फैलाते हैं जो पुरानी व्यवस्था को नष्ट करती है और नवीन युग के उदय के लिये अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है।''

अंग्रेजों के विदेशी शासन में देश कंगाल हो गया। समान्य जन जीवन निःसहाय, रूढ़ियों का बंदी, अंधविश्वासी निर्बल और साधनहीन था। देश की उत्पादन क्षमता गिरी हुयी थी। प्रौद्योगिकी पिछड़ी हुयी थी, पूंजी और धन का सर्वथा अभाव था। इतनी बड़ी आबादी का देश और ऐसी विषम स्थिति में देश के नव निर्माण का संकल्प बिना विज्ञान के विकास के संभव नही था। जब तक वैज्ञानिक सोंच और वैज्ञानिक तकनीक का सहारा नहीं लिया जायेगा तब तक स्थिति पर काबू नहीं पाया जा सकता है और सतत् विकास की परिकल्पना नहीं की जा सकती यह सोंच था शाही जी का। उनका स्पष्ट मानना था कि शिक्षा के विकास के साथ हीं वैज्ञानिक पद्धति का जब तक विकास नही किया जायेगा तब तक भारत का विकास संभव नहीं है। यह प्रेरणा शाही जी को श्रीबाबू के उक्त आलेख से प्राप्त हुयी प्रतीत होती है।

शाही जी मौजूदा हालात में परिवर्तन के माध्यम को स्वीकार करते हुये विकास की संभावनाओं को तलाशा है। उन्होंने कहा है कि गरीबी और पिछड़ापन से समान्य जनता वैज्ञानिक सोंच और आधुनिक तकनीक के बदौलत हीं उबर सकता है। आधुनिकता हीं रूढ़ीवादिता को समाप्त कर सकती हैं। इसके लिये शिक्षा अमोघ अस्त्र है उसी के माध्यम से हीं हम वैज्ञानिक सोंच ला सकते हैं उसी के माध्यम से हीं हम प्रौद्योगिकी का विकास कर सकते हैं। जब तक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास नहीं होगा, वैज्ञानिक खोज और तकनीक से उत्पदान क्षमता नहीं बढ़ेगी तब तक देश और समाज का वास्तविक विकास नहीं होगा यह विचार था शाही जी का।

संदर्भ

1. बनते बिहार का साक्षी, एल०पी०शाही, श्री कृष्ण शिक्षा प्रतिष्ठान, पटना।
2. आधुनिक बिहार में राजनीतिक चेतना–प्रो० (डॉ०) रत्नेश्वर मिश्र–बिहार इतिहास परिषद्, 2014
3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास–डॉ० दीनानाथ वार्म, स्टुडेन्ट फ्रेण्ड्स, गोविन्द मित्र रोड पटना–800004
4. बिहार में स्वतंत्र आन्दोलन का इतिहास–डॉ० कालिंकर दत्त, प्रकाशक–बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी
5. कदम कुंआ, पटना'800003

6- राजनीतिक सिद्धान्त एवं विचार–डॉ० डी०एस० यादव–रजत प्रकाशन, असांरी रोड, दरिया गंज, नई दिल्ली।